प्रेम योगी 'मान'

मधुरिमा

प्रेम योगी 'मान'

शारदपीठ आनन्द भवन के सामने, इलाहाबाद-२११००२

प्रेम योगी
'मान'

सुकवि चिरंजीवी

केदार को

सुस्मृति स्वरूप

अनुक्रम

□

□ □ □

मेरे पिताश्री

मेरे पिता श्री हनुमानप्रसाद लाला महादेवप्रसाद की पहली सन्तान थे। इनका जन्म बाँदा जनपद के कमासिन नामक कस्बे में श्री संवत् १८५१ शाके १८१६ के कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी (शनिवार) को हुआ था। इनकी मृत्यु २४/२५ अप्रैल सन् १८७७ ई० को रात दो बजे हुई थी। गाँव के लोग इन्हें मूनीलाल भी कहते थे।

इन्होंने कमासिन के मिडिल स्कूल से हिन्दी और उर्दू की मिडिल की परीक्षाएँ पास कीं। यह कुशाग्रबुद्धि थे। इनके शिक्षक स्वर्गीय पं० रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' के विद्वान पिता पं० कुञ्जविहारीलाल शुक्ल थे। मिडिल पास करने के बाद इन्हें अंग्रेजी पढ़ने के लिए बाहर भेजा गया, परन्तु इनकी माताजी ने इन्हें वहाँ से फिर गाँव में वापस बुला लिया। माताजी के प्यार की वजह से यह आगे की स्कूली शिक्षा प्राप्त न कर सके।

इन्होंने गाँव में रह कर ही थोड़ी-बहुत अंग्रेजी भाषा का काम-चलाऊ ज्ञान प्राप्त किया और साथ में ही संस्कृत भाषा से भी परिचय प्राप्त करते रहे। कुछ समय बाद इन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की विशारद परीक्षा, और फिर आयुर्वेद में रुचि रखने और औषधियों का व्यावहारिक ज्ञान हो चुकने के कारण वहीं से वैद्यरत्न की परीक्षा पास की। इस प्रकार रासायनिक चिकित्सक होकर अपने क्षेत्र की जनता की निःशुल्क सेवा करने लगे।

इस गाँव में यही एक घर अग्रवालों का था, जिसके मालिक मेरे पिता के नाना लाला भग्गूदास थे। वह यहाँ व्यापार के सिलसिले में बस गये थे। उनकी एक पुत्री थी। और कोई सन्तान नहीं थी। उन्होंने अपनी पुत्री का ब्याह शहजादपुर (इलाहाबाद) निवासी श्री जगमोहन दास के पुत्र श्री महादेव प्रसाद के साथ कर दिया, जो वहाँ से आ कर घर जमाई बन कर रहने लगे और व्यापार में पर्याप्त उन्नति किये।

एक बार मेरे पिता की किशोरावस्था में मथुरा से गाँव में रासमण्डली आयी। उसकी रासलीला देख कर मेरे पिता पर यह प्रभाव पड़ा कि वह उसी मण्डली के साथ जाने के लिए और उसमें काम करने के लिए अड़ गये। ऐसी परिस्थिति में उनके पिता श्री महादेवप्रसाद (पोद्दार) व पं० कुञ्जबिहारी लाल शुक्ल ने इनकी खातिर गाँव में ही दशहरे के दिनों में रामलीला का शुभारम्भ कराया, जिसके फलस्वरूप यह उसमें सक्रिय रूप से भाग लेने लगे और फिर गाँव में ही रहने लगे। रासमण्डली के साथ नहीं गये। इसी सम्बन्ध से इन्हें संगीत और साहित्य से प्रेम हो गया और वह सितार तथा हारमोनियम बजाने लगे एवं गाँव के शिक्षकों की संगति में प्राचीन साहित्य से पूरी तरह जुड़ गये। इस प्रकार तभी से इन्हें कविता के संस्कार प्राप्त हुए।

ब्रजभाषा का उन दिनों व्यापक प्रचार और प्रसार था। रसाल जी भी इन्हीं के उम्र के थे। वह भी ब्रजभाषा में कविता करते थे। अतः ब्रजभाषा के काव्य के संस्कार लेकर यह स्वयं भी ब्रजभाषा में कविता करने लगे। साहित्य सम्मेलन की विशारद की परीक्षा की तैयारी में मैथिलीशरण गुप्त व हरिऔध जी के काव्य-ग्रन्थों का भी इन्होंने अध्ययन किया। 'प्रिय प्रवास' इन्हें बहुत प्रिय था, जिसका सस्वर पाठ भी ये किया करते थे। फलतः इनको खड़ी बोली में काव्य करने के संस्कार भी मिल गये।

इनका ब्याह लड़कपन में ही हो गया था। इनकी पत्नी अर्थात् मेरी माँ का नाम घसिट्टो था। मेरी माँ के पिता फतेहपुर जिले के किसनपुर गाँव के खाते-पीते परिवार के लाला बंशीधर थे। जब ब्याह हुआ तो मेरी माँ ८ साल की थीं और पिता की उम्र भी ११-१२ साल से अधिक नहीं थी।

इनकी पहली सन्तान पुत्र थी। इसके बाद दूसरे पुत्र के रूप में १ अप्रैल सन् १९११ ई० (श्रीसंवत् १९६८ और शाके १८३३ के चैत्र मास के शुक्लपक्ष की द्वितीया के शनिवार के दिन) को मेरा जन्म हुआ।

सन् १९२५ के किसी महीने में मेरे पिताजी घर से असन्तुष्ट होकर सपत्नीक कटनी में जाकर रहने लगे और वैद्यकी करने लगे। मैं भी वहीं के म्युनिसिपल स्कूल में अंग्रेजी की सातवीं कक्षा का विद्यार्थी हो गया। यहाँ किशुनपुर के इनके पुराने परिचित काव्य-प्रेमी श्री रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' के पिता पं० मातादीन शुक्ल उसी स्कूल में अध्यापक थे। जो उसी साल वहाँ से लखनऊ की मासिक पत्रिका 'माधुरी' के सम्पादक मण्डल में नौकरी करने चले

गये। फिर मेरे पिता कटनी से जबलपुर गये और अपनी वैद्यकी करने लगे। तभी मैं भी उनके साथ जबलपुर गया और वहीं के मॉडल स्कूल से आठवीं कक्षा पास की। आठवीं पास करने के बाद नवीं कक्षा की पढ़ाई करने के लिए नैनी (इलाहाबाद) आकर रहने लगा, लेकिन मेरे पिता वहीं रहे। मैं नैनी से रोज इक्के में यमुना के किनारे स्थित यूइंग क्रिश्चियन कालेज में पढ़ाई के लिए जाने लगा।

जबलपुर के प्रवास में रहते हुए वहाँ के पुराने साहित्यकारों से पिताजी की जान-पहचान हुई जहाँ मिलौनीगंज मुहल्ले के एक बाग में काव्य-गोष्ठियाँ होतीं जिसमें व्याकरणाचार्य पं० कामताप्रसाद गुरु, पं० गंगाविष्णु पाण्डेय, ब्योहार राजेन्द्र सिंह तथा पं० प्रेमनारायण त्रिपाठी आदि भाग लेते और समस्यापूर्तियाँ होतीं, कवित्त, सवैये सुनाये जाते। एक बार मैंने भी एक कवित्त द्वारा 'तेग शिवराज की' समस्या की पूर्ति की और उसे सुनाया तो मेरा कण्ठ अवरुद्ध हो गया। तब पं० कामताप्रसाद गुरु ने मुझे प्यार से अपनी गोद में बैठा कर कविता सुनी और प्रशंसा की।

पिताजी को एक बार अच्छी समस्यापूर्ति के लिए पदक भी मिला।

उसी जमाने में कलकत्ते से 'मतवाला' निकलता था। मेरे पिता और कई लोग 'छायावाद' के विरोध में थे। मेरे पिता सहित कई लोगों ने उसके विरोध में रचनाएँ भेजीं। पिता जी की रचना को निराला जी ने (छायावाद के समर्थक होते हुए भी) छापा। ऐसे थे उस समय के साहित्यकार।

इसी बीच मेरे पिता ने जबलपुर छोड़ दिया और इलाहाबाद आकर ऊँचा-मण्डी स्थित 'रसाल' जी के मकान के पास में सड़क के किनारे एक छोटी सी दुकान ले ली और वैद्यकी करने लगे। यहाँ रह कर मेरे पिताजी का सम्पर्क यहाँ के ब्रजभाषा काव्य प्रेमियों से हुआ और वे कवित्त एवं सवैये तथा कभी-कभी खड़ी बोली में भी रचनाएँ लिखने लगे। यह कविता पाठ सस्वर करते थे। 'रसिक मण्डल' के काव्य आयोजनों में अपनी रचनाएँ भी सुनाते थे। 'चाँद' मासिक में तभी इनकी कविताएँ भी छपने लगी थीं। लेकिन इलाहाबाद में लगभग एक साल तक रहने के बाद अपने गाँव लौट आये।

हम लोगों का एक मौजा था—देह। वह पूरा का पूरा हमारी ही जमींदारी में था। हमारी ही सीर होती थी। कमासिन का व्यापार कमजोर हो गया था। तभी पिताजी ने कमासिन छोड़ दिया और मौजा देह के अपने छोटे से घर में रह कर खेती कराने लगे।

मैंने अपनी कविता के संस्कार अपने पिता से प्राप्त किये, जिन्होंने स्वयं गांव में रह कर एक पुस्तकालय खोला था जिसमें उस समय की अच्छी-अच्छी पुस्तकें थीं। मैं उन्हें छिपा कर पढ़ता था। देव पद्माकर, मतिराम, घनानन्द को मैंने तभी पढ़ा था।

मेरे पिताजी शौकीन प्रवृत्ति के सौंदर्य प्रेमी रसिक व्यक्ति थे। कपड़े हमेशा साफ और कीमती पहना करते थे। युवावस्था में भी यह कोसा का साफा बांधा करते थे। मिठाई और ठंडाई के शौकीन थे। तेल-इत्र और पान बहुत पसन्द था। मलाईदार दूध ही पीते थे। घोड़े के भी शौकीन थे, घुड़सवारी करना उन्हें बहुत अच्छा लगता था। जानवरों के पालने का भी शौक था। गाय भैंस, बैल तो बहुत रहते ही थे, कुत्ता, तोता, नीलगाय, हिरन भी पालते थे, संगीत का शौक इन्हें अपने पिता से मिला था। मेरे बाबा को भी तबले का शौक था। शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य था। गोरे चिट्टे रंग के इकहरे बदन के थे। घी, दूध, पर्याप्त माला में खाने के बाद भी ये कभी मोटे नहीं हुए। तोंद नहीं निकली।

मेरे पिताजी उदार वृत्ति के धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। चारों धामों की यात्रा भी की थी। गद्दी पर पान सुपारी की थैली हमेशा खुली ही रहती थी।

पिताजी की स्मरण शक्ति बहुत अच्छी थी। तमाम छन्द याद थे। 'प्रिय-प्रवास' और 'रामचन्द्रिका' के संवाद तो लगभग पूरे ही याद थे। रामलीला में अनुसुइया और नारद का चरित्र अभिनीत करते थे। सामाजिक वचन भी कहते थे। साँप बिच्छू का मंत्र भी जानते थे, इसलिए अगर कोई खाना खाते समय भी आ जाता था, तो थाली छोड़ कर तुरन्त दौड़ पड़ते थे।

ऐसे थे मेरे नेही पिता जिन्होंने हम लोगों को कभी नहीं मारा और जिनसे ही मैंने काव्य संस्कार प्राप्त किये।

स्वाधीनता दिवस १९८५ —**केदार नाथ अग्रवाल**
सिविल लाइन्स, बाँदा (उ० प्र०)

निवेदन

जहाँ कुछ पदार्थ (पद+अर्थ) ऐसे होते हैं जो पुराने पड़ने पर निष्प्रभ, नीरस हो समाज में निरादृत बन जाते हैं, वहाँ कुछ सामग्री (साम्+अग्री) ऐसी भी होती है जो कभी पुरानी न होकर अपने सौंदर्य, माधुर्य से सरस हृदय विद्वत् समाज में सदैव रसप्लावित करती रहती है।

इसी दृष्टिकोण के आधार पर पुरानी बात **मधुरिमा** के नये कलेवर में सँजोई गई है। यदि इसकी रचनाओं ने अपने प्रेमी पाठकों को तनिक भी रसाप्लुत किया तो मैं अपने श्रम को सार्थक मानूँगा।

प्रेमकुटीर
ग्राम—देह
(कमासिन, बाँदा)

प्रेम योगी 'मान'
७५वीं दीपावली, सम्वत् २०२५ वि०
सन् १९६८ ईसवी

गणेश वंदना

एक दंत बिधु भाल,
लम्बोदर गिरिजा सुवन ।
होहु प्रसन्न कृपालु,
जै जै जै करिवर वदन ।।

मंगलकारी नाम,
विघ्न हरण अशरण शरण ।
पूरि करहु मम काम,
प्रेम 'मान' मंगल सहित ।।

मृग मद तिलक बिसाल,
मोहन मुरली अधर धर ।
पीत बसन बन माल,
मोर पच्छवारे जयति ॥

दिन प्रति प्रति छिन हर्षयुत,
जीवन को उत्कर्ष ।
मंगलमय श्री हरि करहिं,
मंगलमय नव बर्ष ॥

श्री गणेश पंचक

१

सवैया :

दिन नायक हैं
निसि नायक हैं,
जल नायक हैं,
थल नायक हैं।
गिरि नायक हैं
फनि नायक हैं,
दल नायक हैं
बल नायक हैं ॥
नर नायक हैं
सुर नायक हैं
रघुनायक हैं,
जदुनायक हैं।
सब एते गने
गननायक के गन,
नायक श्री गननायक हैं ॥

२

चंद सँवारन,
सुंड सिंगारन,
विघ्न बिदारन,
नायक हैं ।

ताप हजारन,
पाप पहारन,
साप संहारन,
नायक हैं ॥

मूसक बाहन,
दूसक दाहन,
मोदक चाहन,
नायक हैं ।

जग्त सराहन
भक्त निबाहन,
एक गजानन नायक हैं ॥

३

'मान' महीप
महीतल के,
मन लाय कहैं
मन लायक हैं।

मोदक दै
मन मोद करें
बर पाय कहैं
बर पायक हैं।।

वेद+रिसी+गुन
लोक सबै,
गुन गाय कहैं
गुनगायक हैं।

नायक हैं,
सुर नायक हैं,
सुर नायक हैं
सिर नाय कहैं।।

४

आठहु सिद्धि
नवो निधि के–
–बर सेवक को,
बर दायक हैं।
मत्त महा
दुख दंदन कों,
बिनु सायक ही
बिनसायक हैं॥
'मान' प्रताप
प्रभाव लखे
बिधि यौं मुख–
चारिहु बाय कहैं।
नायक हैं
सुर नायक हैं,
सुर नायक हैं
सुर नायक हैं॥

५

संभु जबै मनि मंडप मध्य,
गिरीस सुता कर पानि गहैं।
पूजहु आजु भले गनराज,
सबै सुर यौं मुसकाय कहैं।।
पूजन पुत्र, पिता को विवाह,
उछाह उमाह अथाह लहैं।
नायक हैं सुर नायक हैं
सुरनायक हैं सिर नाय कहैं।।

हरि-हर

कवित्त : गोपति बसावै कबौं, गोपति रमावै कबौं,
धारै जटा-जूट कबौं, कबौं लट-कारी है।
रत्नाकर बास करै गिरिजा समेत कबौं
रत्नाकर माँहि कबौं, सिंधुजा बिहारी है।।
गंग सिरधारी कबौं, गंग निरधारी कबौं,
सोभा बाघम्बर, पितम्बर छबि प्यारी है।
मैन-तिय तारी कबौं, मुनि तिय तारी कबौं,
'मान' त्रिपुरारी सो मुरारी रखवारी है।।

कान्ह

कवित्त : रास के रचैया कान्ह, रास के गहैया कान्ह,
चीर के चुरैया कान्ह, चीर के बढ़ैया कान्ह ।
माखन चखैया कान्ह, लाखन लखैया कान्ह,
गज के नसैया कान्ह, गज के रखैया कान्ह ।।
नाग के नथैया कान्ह, नाग पीठ सैया कान्ह,
मोहन कहैया कान्ह, मोहिनी बनैया कान्ह ।
कामरी ओढ़ैया कान्ह, दारिद नसैया कान्ह,
'मान' असहैया कान्ह, मान के रखैया कान्ह ।।

कामना

कवित्त : काम नाँहि, धाम नाँहि, बाम औ अराम नाँहि,
रंच रुची रही नाँहि राज काज साजना ।
साज नाँहि बाज नाँहि लाज नाँहि काज नाँहि,
मुक्तिहू की जुक्ति 'मान' भक्ति नाँहि भावना ।।
भाव नाँहि हाव नाँहि, चाव नाँहि दाव नाँहि,
त्याग अनुराग नाँहि राग रंग राहना ।
राहना सराहना की, चाह ना है चाहना की,
कान्ह एक काम, ना है, कान्ह एक कामना ।।

बहुरूपिया

१

कवित्त :

कच्छ ह्वै सुमेरु धार्‌यौ,
सार्‌यौ काज देवन के,
मच्छ रूप धारि, बारि-
प्रलय मचाये हौ।

बनि के बराह, धरा-
धार्‌यौ निज श्रृंगन पै,
ह्वै कै नर केहरि,
प्रह्लाद को बचाये हौ॥

मोह्यौ देव दानव गन,
मोहिनी सरूप साजि,
बामन ह्वै बलि द्वारे,
भिच्छुक कहाये हौ।

द्रौपदी के काज, लाज-
त्यागि ह्वै बजाज, लादि
पट के जहाज आज,
द्वारिका ते आये हौ॥

२

चोर बनि माखन-
चुरायौ खूब गोपिन के,
गोप वेस धारि,
गौवें नंद की चराये हौ।
बनि के गिरधारी धारि-
गिरि को बचायौ बृज,
मल्ल बनि, मुष्टिक,
चणूर हू नसाये हौ।।
केतक गनावै 'मान'
एक जीह रूप तेरे,
बिधि की भुलानी बिधि,
कौतुक लखाये हौ।
द्रौपदी के काजु लाज-
त्यागि ह्वै बजाज, आजु
पट के जहाज लादि
द्वारिका ते आये हौ।।

कोरी ठकुराई

१

कवित्त :

दीनन के नाथ बने हौ,
कहाय दीनानाथ,
भये कहाँ कबै कहौ
दीनन सहाई कान्ह ।
बलि की दै बसुधा
बड़ाई लही मघवा पै,
रावन की लंक लै
बिभीसनै गहाई कान्ह ।।
गज कों नसाइ, एक
गज कों बचायौ जाय,
चीरहू चुरायौ तबै
चीर है बढ़ाई कान्ह ।
एक सों छिनाई, सो
गहाई 'मान' दूजे काँहि,
ऐसी ठकुराई पै, बने-
हौ जगराई कान्ह ।।

२

गुह ने उतार्‌यौ पार,
तबै ताहि तार्‌यौ पार,
कुबरी ते चन्दन लै,
सुन्दरी बनाई कान्ह।
गीध निज प्रान दीन्हो,
तबै सुरधाम दीन्हो,
चाउर सुदामा ते लै,
दारिद नसाई कान्ह॥
खायकै अघाये पकवान,
खूब गोपिन के,
गिरि को उठाय तबै
बृज को बचाई कान्ह।
ऐसी चाकरी ते कहा
रावरी बड़ाई 'मान'
कोरी ठकुराई पै
बने हौ जगराई कान्ह॥

गोबरधन धारन

१

कवित्त : बोल्यौ गर्ब गाजि, सुरराज मेघ मंडल सों,
बोरौ बृजराज आज, राज काज आये हैं।
देखौ तौ बलाहक बल बापुरे अहीरन कों,
नेकु ना डरात मम पूजा बिसराये हैं।।
'मान' अनुसासन सो निकसे निवासन सों,
मोद मढ़े चाव चढ़े दौरि-दौरि धाये हैं।
घेरि घहरात भहरात थहरात जात,
मत्त मँडरात छहरात घन छाये हैं।।

२

धारा धर धाय, अधाधुंध धुँधवाइ नभ,
अमित अघाय, बारि धारा बरसाये हैं।
झड़कि झड़ाकै पौन, तड़कि तड़ाकै तौन,
कड़कि कड़ाकै जौन प्रलय मचाये हैं।।
हहरि हहराने से सूखि सियराने ग्वाल,
लखैं ना ठिकाने, ठौर-ठौर ठहराये हैं।
'मान' रखवारी बनवारी बीर धीर धारी।
गोबरधनधारी गिरधारी छाँह छाये हैं।।

घनश्याम

१

सवैया :

तरनी तनुजा तन ताकि तबै,
तल तल्पहि के तलफात तहाँ।
सियरी सरसीरुह सी सकुची,
सुख साज सिंगार सोहात कहाँ ।।
मन 'मान' न मान मनोज मथै,
मतवारि भई मतवारि महा।
घनश्याम घने घहराय घिरे,
घनश्याम गये सुधि भूलि कहाँ ।।

२

करि ने है करी बिनती जबहीं,
प्रभु पाँय पयादहि दौरे तहाँ।
हरि तू ही हरी बिपता सिगरी,
परी दासन भीर तिहारे जहाँ ।।
तरिनी है तरी भव सागर से,
गनिका गुह गीध बिचारे कहाँ।
अब 'मान' पुकारत आरत ह्वै,
घनश्याम गये सुधि भूलि कहाँ ।।

कृष्णाभिसारिका

कवित्त : तारागन झिलमिलात,
प्रात नियरात जात,
बात न लखात घात,
कौन आस धारौं री।

आली घरघाली बन-
माली निसि पाली अंत,
भई मतवाली हौं,
कहाँ लौं मन मारौं री।।

तावै तन मैन, चैन-
सैन, नैन आवै नाँहि,
भावै ना सिंगार 'मान'
सुधि क्यों सँभारौं री।

सूनी सेज, सूनी कुंज,
सूनो है कलिन्दी तीर,
स्याम बिन स्याम चीर,
चीर-चीर डारौं री।।

एक चित्र

कवित्त : लकुटि बिराजै, कर-
कामरी कलित राजै,
गुंजमाल साजै, पट-
पीत फहरात पै।

मुरली जसी है संग,
काछनो कसी सुरंग,
गो रज लसी है अंग,
जलज लजात पै॥

आछे मोर पच्छन की
छिटिकि रही है छबि,
कुंडल उजास करैं
स्रौनन सुहात पै।

अलकैं फबीली, फैलि-
फन्दन लौं काँधे 'मान'
स्याम गातवारी, जात-
वारी स्याम गात पै॥

उपालम्भ

१

कवित्त :

कारो मास, कारो पाख,
कारी तिथि, कारी रात,
कारी बिकरारो घटा,
वैरी दुख दंद की।

कारे कारागार माँहि,
कारे ह्वै पधारे कान्ह,
नंद के सिधारे, छाँह
कारे ई फनिन्द की॥

भारत ते प्रेम कीन्हो,
चक्रधारि छेम कीन्हो,
ताहि इतै ग्रस्यौ, ग्राह
नीति छल छंद की।

कारे प्रतिपारे, प्यारे
बिरद सँभारे 'मान'
पैज ठानि भूले तऊ,
गीतिका गयंद की॥

२

कोप्यौ क्रूर कंस जबै,
तोप्यौ ततकाल तबै,
धर्म कर्म लोप्यौ सबै,
मूढ़ मति मंद की।

ता छन उबार्यौ, काज–
सार्यौ नर, देवन कों,
भारी भीर टार्यौ, काटि–
–बेरी फरफन्द की ॥

भारत होत गारत, ह्वै–
आरत पुकारत, औ–
गौवें गुहारत, त्राहि–
त्राहि बृज चंद की।
कीजै ना गुमान, ध्यान–
–दीजै करुना निधान,
लीजै 'मान' कान्ह, गुनि–
गीतिका गयंद की ॥

मन्दिर में

(समस्यापूर्ति)

सवैया : खोजत खोज अनेकन धाम,
अकास पताल के अन्दर में ।
भूलत डोलत डोलि थकै,
भटकै अटकै गिरि कन्दर में ।।
'मान' सुरासुर किन्नर नाग,
सिवासिव ब्रह्म पुरन्दर में ।
सो न लखै मन मोहन मूरति,
जो न लखै मन मन्दिर में ।।

धायौ

(समस्यापूर्ति)

१

सवैया : आदि अनादि अक्लेद अखेद,
अछेद अभेद सुबेद बतायौ।
अंत अनंत अनन्य अवर्न्य,
अगोचर गोचर वाह कहायौ॥
नव्य महाभव फन्दन के, बहु–
बंधन तोरत बार न लायौ।
सो प्रभु माखन चाखन को,
जसुदा गृह ऊखल आपु बँधायौ॥

२

को नहिं पीठ करै अरि सन्मुख,
को नहि पाछिल पाँव हटायौ।
बीर कहै भगिनी करि गर्ब,
सु 'मान' कहौ केहि को रन भायौ॥
भेदन कै रबि मंडल को मिलि,
ब्रह्म धरा बिच नाम कमायौ।
अंत के अक्षर द्वै उलटे करि,
लीजिय प्रश्न को उत्तर धायौ॥

निष्फल जीवन

कवित्त :

छाये हैं अकास माँहि,
मिथ्या ही घुमंडि घन,
चातक की जौं लौं घनी,
प्यास ना बुझाये हैं।

ऊँचे तने पूरे तरु,
ताड़ तरु लाभ कहा,
पञ्छिहू बिचारे नेकु
छाँह लौं न पाये हैं ।।

अगम अगाध सिंधु,
पूरि रह्यौ खारे जल,
पथिक पियासे बूंद—
—बूंद तरसाये हैं।

नाम ना कमाये, आन—
—काम नाँहि आये 'मान',
कौन अर्थ पाये, व्यर्थ—
—माया मद छाये हैं ।।

सफल जीवन

सुन्दर सुबास सनी,
सीतल सरस सुचि,
सीरी सीरी सारदी,
समीर सरसाये हैं।
प्यारे प्यारे पल्लवनि,
पूरन प्रकासि प्रेम,
पीर परि पीर पट
प्रीति परसाये हैं ।।
गान सों मृगान गन
मधु सों मिलिन्द मन,
तपसी तुचा सों, तन—
—तोपि हरसाये हैं।
धन्य धन्य तरुवर
सफल तिहारो जन्म,
'मान' दान बानि आनि,
छिति छाँह छाये हैं ।।

दुरगे !

छप्पय :

चंड मुंड बध करनि,
मत्त महिसुर मर्दनि।
रक्त बीज संहरनि,
प्रलय बारिद जिमि गर्जनि।
सिंह पीठ पद धरनि,
धरनि-धुरि धर्म सुधारनि।
सकल बिभव भव भरनि,
भक्त जन बिरद सँभारनि।
महा मोह-तम-तरनि हौ,
बसहु सदा अर्द्धंग भव।
'मान' नमत कर जोरि कर,
दुरगे ! मूरति कोटि नव।

कुंडलिया :

दुरगे ! दुरिगे दूरिवे,—
—दिन, दिन-मनि सों प्रात।
दुति दसहू दिसि दीपती
अब है दुरदिन रात॥

अब है दुरदिन रात
भ्रात सों भ्रात भिरत नित।
देखु देस पद - दलित,
दुसह दुख खान पान हित ।।
पुजैं पिसाची पीर,
प्रेम पथ पाहन परिगे।
'मान' बिनय सुनु मातु,
बेगि सुधि लीजिय दुरगे !!

शिव सुधा

१

कवित्त :

लेकर त्रिशूल शूल—
नासते समूल आप,
डमरू बजा के, दिव्य—
ज्ञान दरसाते हैं ।
धारते भभूत, बाँटि—
बिश्व को बिभूति देते,
शृंगि नाद द्वारा, न्यारा—
अलख लखाते हैं ॥
गंग की तरंग में, बहाते—
पाप पापियों के,
वृषभ सजा के, निज—
लोक पहुँचाते हैं ।
शेष कुछ रखते न,
देने को लपेटे, शेष,
करते कल्यान 'मान'
शंकर कहाते हैं ॥

२

अघटन घटना पटीयसी
बलीयसी है, माया
सो तुम्हारी जाया,
त्रिजग नचाती है।
अक्ष से कटाक्ष किया,
पात, तो निपात हुआ,
दशहू दिशा में बस,
त्राहि मच जाती है।।
ऊर्ध्व शिखा, देव पगा,
मुंडमाल, शैल सुता,
संयुत बिभूति छटा,
अद्भुत दिखाती है।
तांडौ नृत्यकारी, मद—
—नारी चन्द्र धारी 'मान'
शरण तुम्हारी, सुख—
—सीमा कहलाती है।।

३

यद्यपि त्रिशूल, पास

रखते सदा ही आप,

तद्यपि त्रिशूल, निज—

दास की नसाते हैं।

बैल के सिवाय, अन्य

बाहन रुचै ना कभी,

तौ भी गज अश्व, दास—

द्वार पै सजाते हैं ॥

अम्बर है व्याघ्र चर्म,

अथवा दिगम्बर ही,

नूतन जरी के पट

दास को पिन्हाते हैं।

सेवन मसान किया

करते हैं मौजी शिव

विश्व सिरताज 'मान'

दास को बनाते हैं ॥

४

आतम प्रकासन कौं,
तम तोम नासन कौं,
चन्द्र मौलि ! मौलि चन्द्र
चन्द्रिका प्रसारि दै।
त्रासन के त्रासन कौं
ह्रासन के ह्रासन कौं,
सूल सों त्रिशूल भौ,
त्रिशूल सों उखारि दै ॥
दापिन के दारन कौं
तापिन बिदारन कौं,
रुद्र ! रौद्र नैन, नेकु
तीसरो उघारि दै।
'मान' काज सारन कौं,
मन के निखारन कौं,
पापन पखारन कौं,
गंगा जल ढारि दै ॥

५

सिंहावलोकन

दरसन करत हरत,
तीन ताप आप,
परसन पद पाय पाप पंक परस न ।
पर सन काज कों न,
लेस रहि जात सेस,

सोहत महेस लोक चारि दस हरसन ॥
हर सन मानिबे को
नैसुक न श्रम 'मान'
प्रेम मान करु मन वाकी ओर करसन ।

कर सन जल पाय,
बेल पात सों अघाय,
सूल नासि मूल सों अमोघ देत दरसन ॥

सन्त बर

१

छप्पय :

को मैं, को यह देह,
नेह कहु कासों कीजै ।
अहै कहाँ निजधाम,
चित्त कौने मग दीजै ॥

का असत्य, का सत्य,
नित्य का, अनित कही जै ।
का माया, का ईश,
जीव बंधन किमि छीजै ॥

को ज्ञानी, अज्ञान को,
को सुकृती, को पाप कर ।
हिय बिचार जे करत,
ते, कहियत पूरे सन्त बर ॥

२

बस्त्र रँगे नहिं, मनहिं–
रँगे सुचि सुभग स्याम रँग ।
उज्ज्वल करत प्रकास,
यदपि निसि दिवस स्याम रँग ॥

काम स्याम रंग, धाम–
स्याम रँग, नाम स्याम रँग ।
नैन स्याम रँग, बैन–
स्याम रँग, चैन स्याम रँग ।।
बारिद बारिद स्याम सम,
परहित कारन देह धर ।
पाप ताप करि दूरि, ते
कहियत पूरे सन्त बर ।।

३

सम दम नियम सुधारि,
धारि हिय, काम नसावत ।
सब अराम उपराम,
राम गुन ग्राम बसावत ।।
कोह, मोह, मद मार,
मार-मद दूरि भगावत ।
राग, बिराग, बिराग,
राग अनुरागहिं गावत ।।
रमा रमन में रम न मन, रमारमन में रमन कर ।
रहत बिदेह सदेह, ते, कहियत पूरे सन्त बर ।।

गंगा

कवित्त :

गरल अहारी,
रति नाथ को प्रहारी,
कटि व्याघ्र चर्मधारी,
उपवीत है भुजंगा को ।
कर है कपाली,
उर मुंड माल वाली,
देह नगन कराली
भूत प्रेत सिवा संगा को ।।
अलख जगावै,
भस्म लेपत, मसान बासी,
प्रलय मचावै जग,
बेस है निहंगा को ।
बैकल बेढंगा, ऐसो नंगा कैसे पूजो जातो,
जो पै सिर धारतो न 'मान' एक गंगा को ।।

दधि-दान

कवित्त :

जसुमति प्यारो स्याम,
नंद को निंदारो स्याम,
देवकी दुलारो स्याम,
मधुप कलीन में ।

कंज नैन वारो स्याम,
मंजु बैन वारो स्याम,
अंग मैन वारो स्याम,
छलिया छलीन में ।।

पीतपट वारो स्याम,
स्याम लट वारो स्याम,
कुंज तट वारो स्याम,
डोलत थलीन में ।

आनत न एक आन,
मानत न नेक 'मान'
माँगत दही को दान,
गोकुल गलीन में ।।

देव !

१

सवैया : आनिये देव दया उर नेकसी,
दीन सों दाँव की पैज न ठानिये।
प्रेम पियूष पयोद ह्वै, चातकै,
बुंद के दान सों प्रान प्रदानिये ।।
रूप बिराट दुराय हरे ! बनि सारथि,
या रथ को निज जानिये।
'मान' की एती बिनय मनमोहन,
मानिये मानिये मानिये मानिये ।।

२

लाइहौ देव ! दया उर नेकु ना,
तौ हमहूँ यह ठान ठनैंगे।
नाम दयानिधि के बदले,
सगले अपवाद के गान गुनैंगे ।।
खोरि न दीजियो फेरि कछू,
हम खोरिन खोरिन खोरि खनैंगे।
पाइ हौ ठौर न पैठन को कहूँ,
आपु कहाँ लौं कठोर बनैंगे।।

शिवाजी की तेग

कवित्त :

निसरत म्यान ते,
चलत कब केती बार,
लखि न परत 'मान'—
गति गति गाज की।
रहत नगन तन
गनत न अरि गन,
छुवत हरत तन,
जीह सेसराज की ॥
दम नहिं लेत दम,
दम दम दमकति,
बेदम करत
जमधारि जमराज की।
एकन अनेक, औ
अनेकन करत एक,
एकहू न राखै,
एक तेग सिवराज की ॥

प्रताप जयन्ती

कवित्त : उदैपूर उदैपूर भयो है प्रताप सूर,
सूर सूर कीन्हो, चक चौंधि चाल चाप की।
दिल्ली पति, दलपति, दरपित दरी दुरैं,
दरप दरेरि दीन्हो दावा द्रुम दाप की ।।
ताप परताप सही, पर न पर ताप सही,
बन बन तापस ही ताप सही ताप की।
मान को न राख्यौ मान, 'मान' मान राख्यौ निज,
भाख्यौ अमरेस हू सुकीरति प्रताप की ।।

सोरठा : सिंधु अकब्बर चाल,
हिन्दूपत बोरन चली।
कुंभज सो करबाल
ता छन भई प्रताप की ।।१

ताप ताप परताप, वा मुगलन परताप को।
थाप धरम की थाप, बिजय सिरी परताप की ।।२

तुलसी जयन्ती

कवित्त :

कलियुग कराल क्रूर,
काढ़्यौ है कृपान कापि,
धायौ लै अपार,
काम क्रोध सैन अंक में।

भागे भय भीत भीरु,
जाप जाग जोगी जन,
मुक्ति जुक्ति कल्प बेलि
सूखि रही संक में।।

छाई अधरम अँधियारी,
अधाधुंध घोर
सूझै नाँहि धर्म कर्म,
ज्ञान मति रंक में।

नास्यौ ताहि तुलसी, लै,
ऽमोघ बज्र राम नाम,
उदित उजास 'मान'
मानस मयंक में।।

ग्रीष्म गरिमा

१

कवित्त :

अंत कै बसन्त राज,
साज दिन राज ताज,
तेज सों तपात आज,
भीम दवा दाप की।

बाग औ तड़ाग कूप,
निर्झर नदी अनूप,
पादप पखान औनि,
आसमान छाप की॥

लूकन के झूकन
उचाट जग जो है बाट,
चन्दन चँवर, चंद,
चाँदनी मिलाप की।

छाई है छहौं दिसान,
दीपित सिखी समान,
आन, बान, सान, 'मान'
ग्रीषम प्रताप की॥

२

प्रेरित प्रचंड पौन,
पूरि पूरि धूरि भौन
भोर ही ते भई भूमि,
रुद्र मूर्ति ताप की।

ज्वाल जाल सों बिहाल,
सूर लाल लाल भाल,
प्यास त्रास सिंधु पास,
रश्मि राशि थाप की ।।

छाँहहु की छाँह, हेरे-
पावत पथिक नाँहि,
दीरघ निदाघ दाह
चाह, चाह आप की।

खेचर औ भूचर
चराचर समूह माँहि,
छाई छाप ग्रीषम के
भीषम प्रताप की ।।

पावस पयोद

१

कुण्डलिया : पावस छाँड़ि गये रितु, अँखियन ऊधौ स्याम ।
पाँच पाँच-सर हर लियो, एकै आठौ याम ॥
एकै आठौ याम, बहैं अँसुवन के धारे ।
चंद स्याम घन छयौ, टरै पल एक न टारे ॥
पूनोहू हम लखैं 'मान' भादौं की मावस ।
उन्है फुहार बहार, हमैं तलफावत पावस ॥

२

सवैया : पावस प्रेम पसारत प्रान,
औ पीय प्रवास पयान करी है ।
पीर सरीर सों हाल बिहाल,
सुबाल मनोज की ज्वाल जरी है ॥
'मान' अजौं अलि आये न कंत,
न तंत हमैं कछु जान परी है ।
हैं पिक चातक मोर उतै न,
कि धौं बदरान पै गाज गिरी है ॥

३

कवित्त : उमड़ि घुमड़ि घटा,
घेरि घेरि छावत है,
झोंकन में पौन के,
प्रभाव सीत पोह्यौ है।
छिपि छिपि जात चंद,
बादर की ओट रैन,
सूरहु बिसारि द्यौस,
आपु मुख रोह्यौ है।
चमकि चमकि जात,
दामिनी दमंकि कहूँ,
कहूँ 'मान' मोर सोर,
मोर मन मोह्यौ है।
छेदि छल छंदी,
निरदुन्दी दुष्ट ग्रीषम को
जग सिरि ताज आज
पावस यों सोह्यौ है ॥

४

(सुधि)

बरवा : दम दम दमकि दमिनियाँ दमकति जोर।
हरि हित हहरत हियरा सजनी मोर ॥
फुँहुँ फुँहुँ बुँदियन बरसत बदरा स्याम।
स्याम भइल परदेसिया जिया बेकाम ॥
सन सन बहत समिरिया सर सम लागि।
सूनि रयनि अँधियरिया बीतत जागि ॥
कुहु कुहु कूकि कोयलिया मधुरी तान।
सुनि सुनि होत 'मान' मोंहि मुरली ध्यान ॥
पिय पिय रटत पपिहरा पिय नहि गेह।
गुनि गुनि गइल उमिरिया पिय गुन नेह ॥
गुल गुलबदन गुलबवा अलि मँडरात।
गूथि करौं का हरवा अलि न सुहात ॥
हिलि मिलि सबरी गावत सावन राग।
झूलत झूमि हिंडोरवा अति अनुराग ॥
चुनि चुनि पहिरु नँनँदिया चूनर लाल।
अँसुवन भिजै अँचरवा हमरे भाल ॥

५

कवित्त : बेसर कमान सुर,
दंत दुति दामिन सी,
चख हैं चकोर,
चारु खंजन लजाये हैं ।
पायल के लोल बोल,
कीर पिकी हैं अमोल,
झाँझ झनकारैं,
झिल्ली झाँझ झर लाये हैं ॥

हंसन की पाँति सम,
किंकिनी सुहानी कटि,
हीरन के हार बारि—
—धार सी बहाये हैं ।
आनन पै फैलि रहे,
कारे घुँघुरारे कच,
मानों 'मान' चन्द्रमा पै,
स्याम घन छाये हैं ॥

अँधेरी दिवाली

कवित्त : बीती मान मन्दिर
दिवारी प्रेम जोति बिना,
एती अनरीति नाथ !
कौ लौं उर धारौगे।

कौ लौं नाँहि स्नेह माँहि
सींचि दया बाति प्रभो,
भरि उर दीप, मम—
तिमिर निवारौगे ॥

तापित उसाँसन सों
साँसित सरोज हियो,
कौ लौं ना सुधा, बैन—
—बारि उपचारौगे।

सीत रितु सीतल समीर—
संग स्याम रंग,
कौ लौं ना, रास रस—
रसिक पधारौगे ॥

बसन्त बहार

१

(स्वयंदूतिका)

कवित्त : आयो है बसन्त,
चंद चाँदनी बिछाय नीकी,
सीतल करन करै,
ही तल निखारिये ।
वै तो हैं बिदेस,
ना सँदेस कछू मिल्यौ मोंहि
लागो है अँदेस,
नेकु संसय निवारिये ।
आये हौ उतै ते चलि,
आनँद अपार, बलि—
—कहि कुसलात 'मान'
पीर निरवारिये ।
पंथ श्रम हारिये,
निहारिये हिये न संक,
आजुकी तौ रैन, इतै—
पाहुन ! पधारिये ॥

२

(संत रूपी बसन्त)

कवित्त :

फूले पीत सरसों के
पीत पट धारन कै,
भौंरन की भारी भीर
जटन बढ़ायौ है।
अम्बुज अरुन नैन,
केसर तिलक भाल,
मुद्रा लाइ मंजरी की,
सहज सुहायौ है ।।
कीर पिक चक्रवाक,
चेला चाह लीन्हे साथ,
कोयल की कूक,
कृष्ण नाम सों सुनायौ है।
मानैं 'मान' सत्य, सूधी—
—कामिनी सताइवे कों,
बैरी या बसन्त,
कलि संत बनि आयौ है ।।

३

सवैया : आजु बसन्त की पाँचै भली,
मिलि कै चलिये अली बागन री ।
आइहैं पीतम मैन जगाइहैं,
गाइहैं फागन रागन री ।।
ब्यौंत बनो बिरहागि सिरान कों,
'मान' सों प्रेम की लागन री ।
सीतल होंहि सनेह भरैं,
न बरैं बरजोरी चिरागन री ।।

४

सोरठा : रे मति मंद चिराग, सीतल करु निज दहत हिय ।
है बुझाति बिरहागि, नाहिन औसर बरन कों ।।

(नोट—निम्न उर्दू शेर के भाव पर आधारित)

शेर : किसी से कह दो कि गुल कर दे इन चिरागों को ।
खुशी के वक्त में क्या काम जलने वालों का ।।

५

(बसन्त की बधाई)

कवित्त : गेंदा औ गुलाब,
गुलदावदी पै गूँजि-गूँजि,
बिकसी कलिन अलि,
चूमि रहे दौर दौर।

किंसुक कदम्ब,
कचनार औ अनारन की,
ललित लोनाई लेखि,
झाँकत हैं झौंर झौंर ॥

लौंगन की लता रहीं
लपटि तमालन यौं,
प्यारी परदेसी पिय-
कंठ लागै पौर पौर।

बौरे-बौरे आमन पै,
कोयल अलापै तान,
छाई है बसन्त की
बधाई 'मान' ठौर ठौर ॥

होली

१

कवित्त : के ते द्यौस बीते इन्है,
राग़े अनुराग रंग,
लालहि समोय लाल-
लाल लखैं होली में।
प्यासी रहैं प्रेम की,
ये अँखियाँ तिहारे सदा,
हौंसनि निहारें राह,
आइबे की होली में॥
मानस सरोज माल,
आँसुन सों सींचि सींचि,
साधि कै सजायौ,
साध पूजिबे को होली में।
पावरैं पलक पारि,
रावरोई ध्यान धारि,
जोग की जुगुति 'मान'
जागती हैं होली में॥

२

कवित्त

बारी बैस वारी, त्यौं,
सिंगारन सँवारी, प्यारी,
चतुर चितौन वारी,
देखत में भोली हैं।

सारी जरतारी, माल-
मालती निवारी धारी,
न्यारी नेह वारी, मृदु-
मंजुल मँझोली हैं॥

होली खेलिबे को साज-
साजि लै सखीन संग,
जात हुती, गैल माँहि,
कान्है लखि, बोली हैं।

पारी है हमारी, आजु
बदलो चुकाय लेंहि,
बहुत दिना सों कीन्ह,
लालन ठठोली हैं॥

कैलाश में होली

१

कवित्त : बरिस बितीते, दिन-

—फागन के आये, जानि—

'मान' रसखान, हरि

टोली एक जोरी है।

इन्द्र, बिधि, बरुन,

कुबेर, ये सबेर ही तें,

लीन्हे रंग रासि, मति-

—हास रस बोरी है।।

रजत पहार पर,

संकर समीप जाइ,

रंग झरि लाइ, लाइ—

—अंक मीड़ि रोरी है।

देव कहैं होरी आजु

गन कहैं होरी आजु,

झारि कै भभूत, संभु

कहैं आजु होरी है।।

२

छाई है अबीर की,
धुँधार सिव मन्दिर में,
सेत और असेत सबै,
लाल लाल ह्वै रह्यौ।
लाल गन नायक हैं
गनन के गन लाल,
गौरि लाल, गंग लाल,
गिरि लाल ह्वै रह्यौ॥
संकर सरीर लाल,
सोहै जटा जूट लाल,
भाल लाल, भालहू को,
चन्द्र लाल ह्वै रह्यौ।
मूसक मयूर लाल,
सिंह लाल व्याल लाल,
गरद गुलाल ते,
बरद लाल ह्वै रह्यौ॥

हम और वे

कवित्त : बीती रैन कितनी हैं
जागते न याद कुछ
दिन को तो लोग मुझे,
पागल बताते हैं ।
हँसते हैं ताली पीट,
देख अश्रु पात मेरे,
जाता जहाँ कहीं सभी,
उँगली उठाते हैं ।।

काबू में करके खूब
दिल को हमारे 'मान'
भूल बैठे ऐसे कभी
याद ही न लाते हैं ।
वे तो सुख पाते हैं
इसी में सुख पाते हम,
हमें कलपाते हैं
तभी तो कल पाते हैं ।।

पहेली

कवित्त :

प्रति पल व्यक्त होती है
स्मृति की छाया प्रिये,
कितने अनोखे खेल—
खेल दिखलाती है ।
वे ही मनोरम दृश्य करती—
है सम्मुखीन
सारी घटनाएँ
वर्तमान को भुलाती है ।।

होती है चिंता कुछ
निकट भविष्य की भी,
—करके तल्लीन रंग
अपना जमाती है ।
शून्य में बिलीन शीघ्र
होती खुलते ही आँख
आशा औ निराशा की
पहेली छोड़ जाती है ।।

अनन्त आराधना

कवित्त :

सारी बैस बीती जाति,
सोंचि यौं सनेह वारो,
मोचि कै दृगन बारि,
रीतो हिय ह्वै गयौ।

सैतुक दरस औ—
परस की है बात कहा,
सपनो तिहारो, वाहि–
सपनो सो ह्वै गयौ ॥

नैसुक न पायौ चैन
रैन दिन एकौ छिन
ताते सबै त्यागि कै
समाधि माँहि ह्वै गयौ।

साधनाँहि साधि साधि
साध नाँहि राखी, एक
तेरोई अराधिबो,
अनन्त लागि ह्वै गयौ ॥

पत्र याचना

सवैया :

दीजिये दु:ख,
अनेक हमैं,
सहि हैं, सुख–
–आदर मानि पतीजिये ।

लीजिये, सोनो–
तपाइ, खरो,
कसिकै, कसिकै
नहि रंच पसीजिये ।।

लाइहैं आह न,
नैसुक जीह पै,
मौन ह्वै रावरे,
रंग ही भीजिये

कीजिये येती
निछावर प्रेम की
पुष्प नहीं,
पर पत्र तौ दीजिये ।।

गाज गिरी

(समस्यापूर्ति)

सूर सुता तट
कुंज कुटी मिलो,
चीर चुरावन–
–हार हरी है।

मोर पखा, अल–
–कावलि, पै छबि-
छाजत री पगरी है ।।

लालची, लोचन
लोचन, 'मान'
सों लाइ लुरे
मनसाहू लुरी है।

भेंटि न लीन्हो,
भटू भरि अंक मैं,
बैरिन लाज पै,
गाज गिरी है ।।

सरकी

(समस्यापूर्ति)

सवैया :

सरसी सरसीरुह,
सी सुषुमा,
उपमा, कलिका—
—कल केसर की ।
जरकी बरकी,
जर जेवर की,
दुति दून दिपै,
बर बेसर की ।।
छरकी धरकी,
रस संगर की,
छबि छाय रही,
श्रम सीकर की ।
तरकी तरकी
मुरकी मुरकी,
कर की करकी,
सर की सरकी ।।

हरि यारी

(समस्यापूर्ति)

दाघ निदाघ,
नसाइ कबौं
पुनि पावस,
प्रेम घटा सरसाइहै।
सीतल – मन्द
सुगंध समीरहू,
कोमल पातन
कों परसाइहै ।।
छाइ छटा नभ—
मंडल में, छबि—
—छाकि, सनेह—
—सुधा बरसाइहै ।
'मान जू' नेकु—
धरौ, उरधीर,
लहे हरि यारी,
हियो हरियाइहै ।।

अँखियाँ

दोहा :

लै कर सन्मुख आरसी,
निरखत निपट अयान।
आपुहि चित चक्कित भई,
लखि बड़री अँखियान ।।

बीर धीर तलफैं परे,
छूटैं तीर कमान।
भौंह कमान न ते जवै,
छूटैं सर अँखियान ।।

कंजन खंजन की कहा,
मीन हरिन उपमा न,
इन अँखियन सम देखिये,
लै जग में अँखिया न ।।

किते न कानन में रमे,
त्यागि 'मान' कुल कान,
चन्द्रानन अवलोकि—
कै, कानन लौं अँखियान ।।

का जल धार खर लखौ,
मत्त वारी ! अँखियान ।।

काजल धार खरी लखौ,
मतवारी अँखियान ।।

नयन

नय न अरथ को सारथक,
करत नयन बे पीर ।

सूधे तिरछे ह्वै हनत,
बे गाँसी को तीर ।।

भिखारिनी का गीत

गीत : भला हो सबका हे भगवान ।।

दे या कोई दे न मुझे कुछ करे मान अपमान ।।भला०।।

सब बिधि हे बिधि मंद भाल में इस दुखिया के तूने ।

केवल दुख ही लिख रक्खा हो तो दे दुख दिन दूने ।।भला०।।

मैं उनको सहर्ष अपनाती, कहती हूँ बस इतना ।

जग को रखकर सुखी मुझे ही दे दे दुख हो जितना ।।भला०।।

क्यौंकि न देखी जाती मुझसे जगती तल की पीड़ा ।

करने लगती सदय हृदय में विषम बेदना क्रीड़ा ।।भला०।।

इस नश्वर जीवन में मुझको,

दे प्रभु यह बरदान ।

लेकर सब का दुख,

उठ जाऊँ जग पावै कल्यान ।।भला०।।

रंग में भंग

गीत :

काम क्रोध मदादि मत्सर,
पुत्र मित्र उमंग में।
आ फँसे भारी भँवर के,
बिकट बंधन ढंग में ।।
तैरते हैं मस्त हो आशा-
पयोनिधि में सदा।
पान कितना ही किया,
छण भर न तृप्ति हुई कदा ।।
हैं बुझाना चाहते हम,
प्यास ज्यौं ज्यौं शान्ति से ।।
नित्य होती है प्रबल ऊष्मा,
सुखों की भ्रान्ति से ।।
है अटल परिणाम, इक दिन,
भंग होगा रंग में।
जीवन अमूल्य बहा दिया,
तृष्णा तरल तरंग में ।।

प्रतीक्षा

(कमल के प्रति)

कमल कहो क्या कसक कलेजे में है भरी तुम्हारे ।
किसके लिये व्यग्र हो इतने क्या हैं भाव तुम्हारे ।।
हो निमग्न निशि दिवस एक रस शांत तपो व्रत धारे ।
आतप भीति शीत की बाधा सहते पत्र पसारे ।।१।।
तरल तरंगों की दपेट में अग ज्यों अड़े अटल हो ।
झंझा मारुति की झपेट में भी तुम खड़े अचल हो ।।
बड़े बड़े पादप प्रबाह में बहते जहाँ बिकल हो ।
उसी जगह अति शान्त सुमन से होते पल न बिचल हो ।।२।।
है अगाध जल राशि प्रबाहित तदपि न भय कुछ लाते ।
चक्र मक्र नक्रादि विषम से तनिक न हो घबराते ।।
कलभ निकर कर करसे मर्दन नाना भाँति सताते ।
पर तुम हो वात्सल्य प्यार से गले लिपट अपनाते ।।३।।
कोमल कलित कलेवर पा कर मधुकर अंक लगाते ।
पुलकित प्रेम प्रथा परि पूरित प्रीति प्रतीति निभाते ।।
सहृदय स्वागत कर सुगंध से हो सौरभित बनाते ।
अर्पन अनुपम सरस स्वरस से शुचि सनेह सरसाते ।।४।।

नील कान्त मणि सदृश तुम्हारी आभा कहीं उदित हो।
मोहक मोहन मंत्र जाल सी प्रसर रही प्रमुदित हो ॥
लिये हुये निज चारु अंक में पीत पराग बितरते।
सजल जलद नीलिमा समा हो विद्युत छटा छहरते ॥५॥

नव्य नवोढ़ा सुस्मित बदना रदनावलि दुति प्यारी।
अथवा पुण्य पुरुष के उज्ज्वल यश सी विस्तृति न्यारी ॥
मुग्धा के मद भरे नेत्र सी परम मनोरम लाली।
श्रान्त पथिक गन के मन हरती सुन्दर सुषमा वाली ॥६॥

कोई देख अतृप्त नेत्र से मन की साध मिटाता।
कोई तुम्हें लगा छाती से दिल की लगी बुझाता ॥
कोई भक्त तोड़ कर सादर शिव के शीश चढ़ाता।
कोई हार बना निज प्रिय का मुख सौन्दर्य बढ़ाता ॥७॥

विश्व प्रेम की भव्य भावना से भूषित यों रहते।
मन मन्दिर के द्वार खोल कर मूक सदा ही रहते ॥
कहो कहो कुछ भी तो बोलो इतनी कठिन परीक्षा।
क्यों दे रहे हेतु क्या इसमें किसकी तुम्हें प्रतीक्षा ॥८॥

पत्रोत्तर

१

(श्री भगवान कृष्ण के नाम)

सोरठा : जीवन धन प्रानेस, पाइ सँदेसो रावरो ।
रह्यो न दुख लवलेस, धन्य भाग मोरे भये ।।

२

सवैया : आजु सुभाग जगो अपनो,
जु लई अपनो करिकै सुधि मोरी ।
हौं दिन रैन सुखी यह जानि,
है चैन सों कूबरी कान्ह की जोरी ।।
पै दुख पावति हौं सुनि कै, जब
ग्वाल चबाव करैं अति जोरी ।
दासी के दास भये हरि, हा !
तजि दीन्ह है राधा जो राज किशोरी ।।

३

अब जोग को लै के करैंगी कहा, हम लै के बियोग भँई सो भँई ।
वहि रावरी साँवरी सूरति पै, हम चेरी ह्वै वारी गँई सो गँई ।।
मन आपनो ह्वै न रह्यौ अपनो, बिरहानल ताप तँई सो तँई ।
कछु सोच नहीं पुनि ह्वै है कहा, हम प्रेम की बीरी लँई सो लँई ।।

४

प्यासी रहैं तन पानिप की,
दुखिया अँखियान को का समुझाऊँ।
आपु सुजान सिरोमनि हैं,
बहतौ लिखि कै कहा बात बढ़ाऊँ ।।
पंकज पाँवन सीस नवाइ,
मनाम्बुज पत्र सप्रेम पठाऊँ।
जो दलिहौ यहि पाँवन सों,
धन भाग तऊ पद पावन पाऊँ ।।३।।

पता

दोहा : श्री शुभ मथुरा नगर में,
राजमहल के पास।
कुबजा के घर पहुँचि कै,
मिलै स्याम को खास ।।

पाय न पाये

(समस्यापूर्ति)

१

सवैया : स्रौन सुने न कथा कहुँ कृष्ण की,
जीह न गोबिंद के गुन गाये।
दान दियो न कबौं कर सों, नहिं,
पायन तीरथ ओर सिधाये।।
सीस नयौ नहिं जो गुरु देवन,
त्यौं मन ना सत्संगति लाये।
लोचन मोहन रूप निहारे न,
मानुस को तन पाय न पाये।।

२

रोय बितीत करी सिसुता, अरु बालपना सब खेल गँवाये।
कामिनि काम किलोल हिँडोल में, मूरख यौवन के मद छाये।।
आइ गई बिरुधाई, लहे दुख दारुन अन्त समै पछिताये।
हाय न ध्याय लियो मनमोहन, मानुस को तन पाय न पाये।।२।।

अन्योक्ति

समस्यापूर्ति—काँपि उठी धरती

कवित्त : सत्य हरिचन्द जैसो,
धर्म धर्मराज कैसो,
धीरता धरेन्द्र की,
न तोसी दीख परती ।
क्षमावान क्षोनी ज्यौं,
गँभीर रत्नाकर त्यौं,
तेज दिन नाथ सों,
न दीठ है ठहरती ॥
धीर बीर पारथ सों,
काज परमारथ कों,
कृष्ण सों निरस्त्र, सदा-
शक्ति, शक्ति भरती ।
काँपि उठो इन्द्र लोक,
यम लोक, बिधि लोक,
काँपि गो पताल शेष,
काँपि उठी धरती ॥

मिडिल कक्षा के विद्यार्थियों के लिए

बहावें

(समस्यापूर्ति)

सवैया :

जिसकी रज से
ये शरीर बना,
चहै जाँय जहाँ
जिसके कहलावें ।
बल से जिसके,
बलवान बने,
हम आनँद से,
निज मौज उड़ावें ।।
अब दीन मलीन,
औ बस्त्र बिहीन,
उसे लखते, नहि-
लाज लजावें ।
अपमानित, कातर-
दृष्टि हिये,'
तुम पै, उसके
दृग नीर बहावें ।।

आयें

(समस्यापूर्ति)

छूत के भूत को
दूर भगाकर,
अन्त्यज भाइयों
को अपनायें।

त्यागि अपावन-
बस्त्र बिदेश के
पावन खद्दर सों
लौ लावें ॥

छोड़ें नहीं, निज-
स्वत्व कभी
प्रिय बालकों को
हम बीर बनायें।

शोक है हो कर
भारत के, फिर
भारत ही के
न काम में आयें।

बरसो घनश्याम इसी बन में

(समस्यापूर्ति)

१

सवैया : बन बीहड़ नाम पड़ा, उजड़ा,

वह बाग रहा न हरापन में।

सुचि सौरभ संयुत सीतल वायु,

बहाता रहा जो दिगंतन में।।

बिलखैं पपिहा पिक चातक मोर,

लखैं नभ नीरज नैनन में।

घहरो छहरो न चुर्तादिक में,

बरसो घनश्याम इसी बन में।।

२

जलते जलते जल जात जले,

जल शत्रु निदाघ कुशासन में।

खलते खलते खल खूब खिले,

खिलना हुआ बंद कली गन में।।

झुलसाये झकोरे गये तरु बृन्द,

मिलिन्द मसोसि रहे मन में।

दुख दारुन देखि दया ते द्रवो,

बरसो घनश्याम इसी बन में।।

असनेह

दोहा : स्नेह जरावत बाति को,
बाति जरावत स्नेह।
मौन भये दोऊ जरैं,
कहाँ 'मान' अस नेह ।।

लालसा

सोरठा : जपत निरंतर नाम,
काम धाम बिसरो सकल।
'मान' न छिन बिसराम,
एक दरस की लालसा ।।

मान

सोरठा : सौहें कीन्ह न नैन,
बैन हँसौं हे नहिं कह्यौ।
पल छिन परत न चैन,
सुधि नहिं बिसरत 'मान' की ।।

मनमानी

सोरठा :

बरबस सरबस दीन्ह,
वारि मंदिर मुसकानि पै।
मनमानी मन कीन्ह,
बस न चलो कछु 'मान' पै ॥

देह करत बिनु नेह,
आतप ताप अदेहर सर।
बरसहु सुधा सनेह,
मोहित मोहन स्याम घन ॥

अजहुँ समुझु तजि टेक,
नरतन रतन न पाय पुनि।
पर्‌यौ भुजग मुख भेक,
जग जीवन छिनहू न थिर ॥

वृथा भ्रमै मन मूढ़,
मोहन मूरति घट बसी।
ढूँढ़ सकै तौ ढूँढ़,
पलटि नैन की सैन सों ॥

रे अम्भोदक मीत,
बुन्द लागि तरसाव नित।
प्रीति रीति अनरीति, चाहक चातक 'मान' मन ॥

कौन

१

कवित्त :

जल, थल, तेज, वायु,
किसके नियंत्रण में,
रात दिन काल चक्र,
क्रम से चलाता कौन ?

बीज में असंख्य वृक्ष,
वृक्ष में असंख्य बीज,
राई को सुमेरु,
मेरु राई है बनाता कौन ?

कौन है बिराट से भी,
महत बिराट एक,
सूक्ष्म से सूक्ष्म हो के,
बाणी में न आता कौन ?

सत्ता औ महत्ता से है,
कण कण ओत प्रोत,
तेजोमय सूर्य, चन्द्र
में प्रकाश लाता कौन ?

२

लीन कर लेता विश्व,
　एक अणु मात्र ही में,
　　पल भी न होती देर,
　　　फेर उपजाता कौन ?

एक न एक रचै,
　एक ते अनेक रचै,
　　नेक औ अनेक रचै,
　　　त्रिगुण रचाता कौन ?

ऊर्ण नाभि के समान,
　विस्फुलिंग ज्यौं कृशानु,
　　एक औ अनेक भान,
　　　करता मिटाता कौन ?

अपने से अपने को,
　करके अनेक रूप,
　　अपने से अपने को,
　　　जाल से छुड़ाता कौन ?

अनुवाद

१

मूल : स्वामिन् निसर्ग मलिन्: कुटिलश्चलोह—
—मेता दृगेव च रिपुर्मम मृत्यु पाशः ।
भ्रूपल्लवस्तव तथा बिधि एव तस्य,
शान्त्यै बिषेहि विषमे, बिषमेव पथ्यम् ॥

कवित्त : चंचल कुटिल मलिन मन, है जैसो मेरो,
तैसोई त्रिगुन युत महा शत्रु काल है ।
लीन्हे ब्याल पाश हाथ, घेरे रहै आठौ याम,
जितै दीठ फेरौं तितै, दीखै बिकराल है ॥
एतोई अधार नाथ ! रावरी भ्रकुटि सोई,
चपल, बक्र श्याम, न ब्यापै ताकी चाल है ।
बानक बनो है पूर, 'मान' त्रास कीजै दूर,
बिष हरै बिष भूरि, बिषै पथ्य पाल है ॥

२

मूल :

यौ तौ शंख
कपाल भूषित करौ,
हारास्थि,
माला धरौ ।

देवौ द्वारवती
श्मशान निलयौ,
नागारि
गो बाहनौ ।।

द्वि त्र्यक्षौ,
बलि दक्ष यज्ञ मथनौ,
श्रीशैलजा
बल्लभौ ।

पापं मे हरतां
सदा हरि हरौ,
श्रीवत्स,
गंगा धरौ ।।

कवित्तः

राजै बन माल हिये,
मुंडमाल भ्राजै भव्य,
शंख शुभ्र शोभित,
कपाल कर धारे हैं।

पक्षी पति, पशुपति,
बाहन बिचित्र बने,
देवद्वार वारे, त्यौं
मसान मतवारे हैं॥

मथ्यौ बलि दक्ष यज्ञ,
अक्ष द्वै तीन स्वक्ष,
सिंधु सुता, संग सती,
अंग उजियारे हैं।

पाप पुंज दूरि करैं
सर्बदा हमारे 'मान'
हरि हर प्यारे, जे—
श्रीवत्स गंगधारे हैं॥

३

मूल : निवृत्त तर्षै रुपगीयमानाद्,
भवौषधाच्छ्रोत्रमनोभिरामात् ।
क उत्तमश्लोक गुणानुवादात्,
पुमान्विरज्येत बिना पशुघ्नात् ॥

सवैया : गान करैं गुन,
जासु सुधी गन,
त्यागि तृषा
तिन सों तनकी ।
शोषक भेषज,
जो भव सागर,
प्रेम मयूर
घटा घन की ॥
'मान' सुधा सम,
स्रौनन सों धँसि,
रंजक जो
बिषयी मन की ।
काहि रुचै न,
पशुघ्न बिना
प्रिय की रति
श्री नँद नन्दन की ॥

४

मूल : इदं शरीरं शत सन्धि जर्जरम,
पतत्यवश्यं परिणाम पेशलम् ।
किमौषधैः क्लिश्यसि मूढ़ दुर्मते,
निरामयं कृष्ण रसायनं पिव ॥

छप्पय : अनुपम जेहि तू कहत सुनत
समुझत अपनोपन ।
नहि अघात करि गरब,
ललकि लखि मुकुर छिनहि छन ॥
रक्त मांस मय अस्थि मेद—
मज्जा निरमित तन ।
शतसंधिन जर्जरित, नाश निश्चय
बिचारु मन ॥
'मान' बिबिध उपचार सों, सहत दुर्मते ! क्लेश कस ।
कर न निरामय पान कर, कृष्ण रसायिन अमिय रस ॥

बाल बिनोद

(संस्कृत श्लोक का अनुवाद)

सवैया :

काहे गणेश तू रोवत, मातु

षड़ानन है मम कान मलै री।

क्यौं असकंद ढिठाई ! नहीं,

यह आँगुरिन सों अँखियान गनै री।

ऊधमी तू इकदंत बड़ो, नहीं,

नापत सुंड सदा यह मेरी।

बाल बिनोद प्रफुल्लित गौरि,

सदा जग मंगल 'मान' करै री ।।

योगाष्टक

१

(योग की व्यापकता)

कवित्त : अक्षर ककार आदि,
तौं लौं रहैं वृत्ति हीन,
जौं लौं आ अकार निज,
जोगहिं जगावै है ।
पावै ना बिराग रोग,
औषधि के बिना जोग,
भोगहू अभोग, बिना—
जोग जग गावै है ।।
तिनुका कनूका आदि,
बासव को बज्र बादि,
बिना जोग प्रकृतिहू,
शून्य दरसावै है ।
रंचक न काज सरै,
विश्व माँहि बिना जोग,
लोकन अलोक जोग,
ब्यापक लखावै है ।।

२

(योग की व्यापकता)

कवित्त : जोग बिना सिद्धि नाँहि,
सिद्धिहू समृद्धि नाँहि,
निद्धि नाहि नेकु, बिना,
जोग ठहरावै है ।
जोग बिना पंच भूत—
—रचना प्रपंच नाँहिं,
साधना समाधि नाँहि,
शान्ति सरसावै है ।।

धाता संसृजनि शक्ति,
संहर हरानुरक्ति,
विश्वंभर भरन भक्ति,
जोगहि सों पावै है ।
आदि लखौ, अंत लखौ,
मध्य मध्य मध्य लखौ
जहँ लखौ, तहँ जोग
व्यापक लखावै है ।।

३

(हठयोग)

कवित्त :

आसन बिचारि मारि,
आसन सुधारि मारि,
साँसन सँभारि धारि,
सासन कै मन को ।

पूरक प्रसार सारि,
रेचक प्रचार पारि,
कुम्भक केंवार मारि,
काया निखरन को ।।

बाँधि कै जलंधरादि,
नासिकाग्र दीठि लाइ,
खेंचरि चरावै जीह,
अमृत चखन को ।

सोवत जगावै, पुनि,
कुण्डलिनी सर्पिनी सी,
भेदै षट चक्र 'मान'
ब्रह्म दरसन को ।।

४

(ज्ञानयोग)

कवित्त :

सपने समान आन
अपने प्रतीत होत,
मोह, मद, मान, नेह,
गेह में परै नहीं।

जौं लौं नाँहि ज्ञान दीप
उर में उजास करै,
रसरी फनीस तौं लौं
मारे ते मरै नहीं॥

बारि, बुंद, बीचि, जान
अंतर अजान 'मान'
एकै पहिचान, ध्यान
साँचो बिगरै नहीं।

दूजो है न तीजो, एक–
–तू ही तू प्रकासित है,
हौं हूँ ब्रह्म, तैहूँ ब्रह्म,
टारे ते टरै नहीं॥

५
(निष्काम कर्म योग)

कवित्त :

कारन हैं बंधन के,
भूरि भव फन्दन के,
कर्म औ अकर्म सबै,
द्वन्दन सने रहैं।

कर्म में बिकर्म होत,
कर्म हैं अकर्मन में,
गहन प्रसंग संग
घूमत घने रहैं।।

कौशल कुशल लोग,
करिकै निष्काम जोग,
सिद्धि औ असिद्धि भोग,
समता गने रहैं।

कामना हि त्याग करैं,
काम नाँहि त्याग करैं,
फल सों न लाग करैं
बारिज बने रहैं।।

६

(सेवा योग)

कवित्त :

सेवक हौं पूरि रह्यौ
साईं सचराचर में,
लागौं काज सबही के,
दूजे करमैं नहीं।

रूप, रस, पर्स, गंध,
कंध लै न होवै अंध,
इन्द्र पद मुक्ति हू लौं
त्यागै बिरमै नहीं।।

'मान', अपमान, भान,
नैसुक न लावै 'मान'
सेवा भाव धारै प्रान,
भोगन रमै नहीं।

आठौ याम साहेब की,
हाजिर हजूरी रहै,
बीस बिसे, चारि बीस
चारि भरमै नहीं।।

७

(जप योग)

कवित्त :

सीता राम, सीता राम,
सीता राम, सीता राम,
राधेश्याम, राधेश्याम,
श्यामाश्याम कहु रे ।

उठत में, बैठत में, सोवत में, जागत में,
चलत में, फिरत में, नामै रटि रहु रे ॥

तजि कै भरोस आन,
बाच्या, मन, कर्म, प्रान,
अचल बिस्वास 'मान'
एकै चाह चहु रे ।

नाम पतवार, गुन बृत्ति, जोरि नौका तन,
अगम भव सिंधु में अभय ह्वै बहु रे ॥

८

(प्रेम योग)

कवित्त :

रोवै कबौं, गावै कबौं
हँसि बतरावै कबौं,
धूरि उरावै कबौं, बाल केलि संग में ।
नाम सुनि पावै, पल-
पलक न लावै कल,
पुलकि सरीर धावै, नाचत उमंग में ।।
बैकल कहावै, मन-
मान कछु लावै जनि,
बोरै दिन रैन तन, एकै प्रेम रंग में ।
वाही को पुकारै, ध्यान
आपन बिसारै 'मान',
प्रेम पागि वारै प्रान, प्रीतम प्रसंग में ।।

योग में नौ रस

श्रृंगार

सवैया : सरिता तट राजत रम्य कुटीर,
चहूँ दिसि छाइ रही हरियारी।
कदली कचनार अनार लसन्त,
हसन्त जुन्हाई जुही छबि न्यारी॥
तँह सोहत सेत सु आसन पै,
पदमासन सों इक गौर पुजारी।
फहरैं अलकैं अनिमेस लगीं-
पलकैं ललकैं रति ब्रह्म बिचारी॥

बीर

कवित्त : बासना बिचारो बैर-
बाँधि कै करैगी कहा,
राखिहौं अडोल, चित्त-
कामना निवारि कै।

बाम-काम, कोह छोह,
द्रोह को दरेरि, मोह-
माया मुरझाइ डारौं,
जोग जोति बारि कै ॥

भँवर गुफा में जाइ,
जीव सीव सों मिलाइ,
आवागौन कों नसाइ,
राखौं पैज पारि कै।

आनन प्रसन्न,
चतुरानन निहारा करैं,
हारा करैं दुष्ट द्वंद,
हिम्मत बिसारि कै ॥

रौद्र

कवित्त : बार बार बारन कै,
चित्त कों चितायौ, तऊ,
चेतत अचेत, नाहिं,
हठि बैर धारै है ।

चंचल चलाँक, कबौं-
चूकत न घात करै,
छहौ रिपु संग लीन्हे,
बनो बटमारै है ॥

अधर फरकि उठै,
भाल पट्ट रेखैं तनी,
दृग भये लाल मानौं
ईस काम जारै है ।

भ्रकुटि भई है बक्र,
ढीठ डीठि हू अचक्र,
प्रणव को दंड धारि,
स्वाँस सर मारै है ॥

अद्भुत

सवैया :

मूँदि कै नैन,
लखैं त्रय लोकहिं,
पंख बिना नभ में बिहरैं।
मेरु सों भारी,
सरीर करैं,
तिन तूलहु की समता निदरैं॥
धारि कमंडल में
भुवि मंडल,
दंड अदंड बनै बिचरैं।
हिंसक जीव,
रहैं चकि, ह्वै-
थिर बैर परस्पर को बिसरैं॥

भयानक

सवैया : बास गुहा गिरि ठाँव कुठाहर,
है सुनसान न जात कह्यौ।

घोर अरन्य निसीथ कुहू,
बनराज दहारि दहारि रह्यौ ॥

मत्त गयंद चिघारैं कहूँ,
झरना झहराइ प्रबाह लह्यौ।

काँपैं दिगन्त के छोर जहाँ,
तहाँ सिद्ध समाधि की गोद गह्यौ ॥

बीभत्स

कुण्डलियाँ

नेती धोती बस्ति सों,
नाक, लार, कफ, पित्त।
विष्टा, मूत्र, कुगंध अति, लहै मलिनता चित्त॥
लहै मलिनता चित्त,
नाक सों डोरा डारै।
धोती मुख सों लीलि, लार कफ पित्त निकारै॥
बिष्टा मूत्र मलीन,
लीन बस्ती के हेती।
भागै मन बिचकाय करै जब धोती नेती॥

करुण

बरवा : इक इक सन रहि हिलि मिलि बिलग न कोय।
बीतल बहुत दिवसवा, इक मन होय॥

इक दिन अइसन आइल समउ खुटान।
मितवा दूरि बहाइल संग छुटान॥

भटक्यौं बहुतक देसवा, मन न थिरान।
केतक सह्यौं कलेसवा, अधिक पिरान॥

कइलै कौन जतनवाँ, बिपता पूरि।
सो सुख ताकर गुनवाँ रहौं बिसूरि॥

सुने न कोऊ किहनियाँ, अस असहाय।
बन बन फिरौं जोगिनियाँ, कछु न सुहाय॥

जोग जुगुत जुरि जइले जिया जुराय।
मिलि दुइ इकइलै, विपति सिराय॥

हास्य

छप्पय :

ऊपर करियत पाँय,
सीस नीचे कों राखत ।
बाहैं दोऊ पसारि,
कहैं अमृत रस चाखत ।।
हाथ पाँय को मोरि,
पीठ ऊपर कहुँ धारत,
छाती के बल बैठि,
उष्ट्र आसन उच्चारत ।।

अंग अंग तिर भंग अस, पच्छि राज अनुहारि लखि
प्रमुदित जन मन होंहि अति, इंगित करि बिकसाइ मु

शान्त

सवैया : थिरता न कहूँ,

जग में दरसै,

छिन भंगुर,

जीवन जानिये जू ।

अपनो अपनो करि,

जोई गहै,

सपनो सो, सोई

परमानिये जू ॥

कहुँ सीतल गंग—

प्रबाह समीप,

निरीह अचिंत

अमानिये जू ।

सुख आनँद मूरि—

बिसूरि सदा सिव

सेइ, समाधि

समानिये जू ॥

ज्ञान की सात भूमिकाएँ

ज्ञान

दोहा : निज स्वरूप में जागिबो, ज्ञान कहावै सोय ।
सात अवस्था चित्त की, 'मान' भूमिका होय ।।

शुभेच्छा

सवैया : जो हिय में इमि भाव जगैं
अति मूढ़ हौं सत्य नहीं अपनी मति ।
हाय कहाय सरीरिन कों,
सिरमौर गँवाइ दई सिगरी पति ।।
लीन मलीन रहौं नित हीं,
भव सिंधु मँझारि सिवारन में अति ।
संगति साधु शुभेप्सित है,
सत शास्त्र बिलोकि लहौं सु महागति ।।

विचार

सवैया :

जाल जंजाल में हौं अरुझ्यौ,
यह मारग तौ अति ही दुख मूल है।
झूँठ प्रलोभन हैं जग के,
सहनो इनके सँग संसृति सूल है॥
सत्य असत्य लखाय प्रतच्छ,
सुशास्त्र बताय रहे भ्रम भूल है।
'मान' अगावन आवन जावन—
—सागर माँहि बिचारहि कूल है॥

तनुमानसा

शुभ इच्छा सह अरु विचार उर आनिये।
इन्द्रिय स्वादन सों बिराग मन मानिये॥
करै तत्व अभ्यास, नचित विषयन फँसा।
तृतिया भूमिका कहैं, ताहि तनुमानसा॥

सत्वापत्ति

सवैया : शुभ इच्छ विचार सों युक्त जबै,

तनु मानस में, तनु मानसा लावै ।

उपराम अराम सों इन्द्रिन के,

जग के सब राग बिराग बसावै ।।

सुनि कै गुनि कै निदिध्यासन सों,

निज सत्य स्वरूप में आपु समावै ।

इमि साधन, सा, धन सोधन 'मान'

अमान तौ सत्व अपत्ति हि पावै ।।

अशं शक्ति

दोहा : चारि भूमिका का जु फल,

शुद्ध विभूति महान ।

असं शक्ति ता मँह रहै,

असं शक्ति सो 'मान' ।।

पदार्था भावनी

सोरठा : जाँय दृश्य सब भूल, हेय पदारथ जगत के।
गुनौ 'मान' सुख मूल, ताहि पदार्था भावनी ॥

तुरिया

सवैया : बार बार धारि धारि दीर्घकाल लौं अभ्यास,
भूलि भ्रम भेद भूरि, भव भाय को अभ्याय।
ह्वै सुषुप्ति के समान, कर्तृ ज्ञान सों अज्ञान,
एक सों न भिन्न आन, संबित सरूप लाय ॥
देख्यौ अनदेख्यौ सम, रहै कहाँ मम त्वम,
ताको कहा करै जम, रूप रूप में बिलाय।
जीवित ही मुक्ति मान,
तुरिया पदस्थ जान,
...श्री बशिष्ट यौं बखान
...ब्रह्म ब्रह्म में समाय ॥

विजय दशमी

जयति जय जगती जन मन प्रान,
शरद की सरस सरल मुसकान,
जाति की जीवन ज्योति सजीव,
विजयप्रद विजयादशमी शुभ्र ।।

मूर्धन्य प्रगतिशील कवि श्री केदारनाथ अग्रवाल

के

माता

स्वर्गीया श्रीमती घसिट्टो

पिता
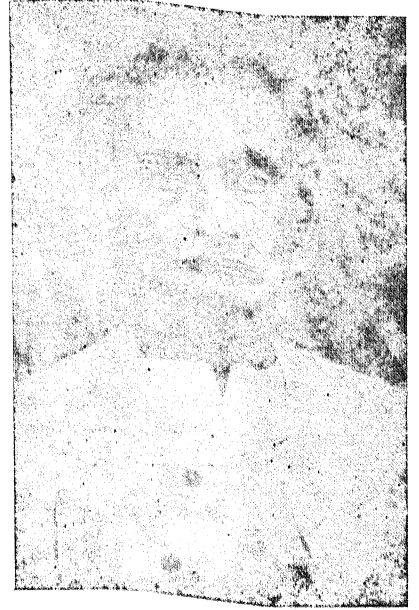
स्वर्गीय श्री हनुमानप्रसाद अग्रवाल
(प्रेम योगी 'मान')